꧁ आत्मा ꧂ 3.9.15

ध्यान "आत्मा" की वह साधना है, जो "परमात्मा" के लिये की जाती है, "आत्मा" की कोई "अपेक्षा" ही नही होती

बाबास्वामी
3/9/15

7.9.15

आत्मसाक्षात्कार

"आत्म साक्षात्कार" बीना जिवंत "सद्गुरु" के संभव नही है।

बाबास्वामी

7/9/15

❀ अधीकृत ❀ 8.9.15

"आत्म साक्षात्कार" वही सदगुरु करा सकता है, जिसे सदगुरुओ की सामुहिक शक्तीने "अधीकृत" किया हो।

बाबा स्वामी

8|9|15

प्रसाद

10.9.15

आत्म साक्षात्कार तो "सद्गुरु" की "करुणा" का "प्रसाद" होता है,

बाबास्वामी
10|9|15

❀ कृपा प्रसाद ❀ 11.9.15

एक "झरने" के समान "सदगुरु"
के शरीर से कृपा प्रसाद
"बरसते" रहता है, उसे ग्रहण
करने के लिये आवश्यक है,
की झरने के निचे जाया जाय
"स्नान" स्वंयम ही हो जायेगा

बाबास्वामी
11/9/15

❀ व्यवहार ❀

12.9.15

"कृपा प्रसाद" कोई कर नहीं
सकता और न कोई ले सकता
है, क्योंकी लेना देना तो
शरीर का व्यवहार है,

द्वारकाधीश
12/9/15

19.9.15

❀ अधीकृत माध्यम ❀

"अधीकृत" माध्यम दिखता "एक" है। लेकीन लाखो आत्माएं उसके साथ जुडी होती है, और वह लाखो आत्माओ के साथ जुडा होता है

बाबा स्वामी
19.9.15

गुरुकार्य 23.9.15

जो कार्य करने से सदगुरु को "दुख" पहुचे वह कार्य "गुरु कार्य" कैसे हो सकता है, क्योकी "गुरुकार्य" तो "सदगुरु" को "प्रसन्न" करने के लिये होता है।

बाबा स्वामी
23.9.15

❀ भाव ❀

25-9-15

शरीर का संमन्ध सदैव शरीर के "भाव" के साथ होता है, "शरीर" भाव समाप्त हो गया तो शरीर छूट जाता है।

आत्मस्वामी

25/9/15

❀ नापसंद ❀

26.9.15

अनेक लोग अगर "आप" को नापसंद करते है। तो आप अपना "आत्मचिंन्तन" करो ऐसी क्या कमी मेरे मे है। मुझमे क्या "दोष" है।

बाबास्वामी

26/9/15

जड़े

27.9.15

"माँ" और "बाप" हमारी "जड़े" है, उनको प्रसन्न किये बीना "आध्यात्मीक प्रगती" की शुरवात ही नहि हो सकती है।

बाबा स्वामी
27/9/15

❀ यश ❀

29.9.15

अपने "भाई" और "बहन" से संमन्ध अच्छे होने पर ही जिवन मे "यश" मीलता है, यह मेरा ६० साल का "निजी" अनुभव है,

बाबास्वामी

29/9/15

दृष्टीकोण

30.9.15

आप का दृष्टीकोन अगर सभी के प्रती नकारात्मक है, तो समझलो कीसी नकारात्मक शक्ती ने आपको जकड लीया है,

बाबा स्वामी
30/9/15